बिजनेस

संस्थापक एवं अध्यक्ष : श्री प्रद्युम्न कुमार शर्मा

ोग : व्यापार : कारपोरेट

फर्जी बिलों व हवाला के जरिए भारत के अरबों डालर अमेरिकी बैंकों में

यूनिफिन

नई दिल्ली, २८ जनवरी। इस समय जबकि देश वित्तीय संकट से गुजर रहा है, भारतीय व्यापारियों ने भारतीय रुपयों का प्रवाह अमेरिका की तरफ मोड़कर एक नई समस्या को जन्म दे दिया है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ फाइनेंस ने आज जारी एक वक्तव्य में जानकरी दी है कि भारतीय व्यापारियों ने केवल १९९४ और १९९५ में ही ११.३ अरब डालर की भारतीय पूंजी अमेरिका स्थानांतरित कर दी है।

प्रत्येक तिमाही को जारी होने वाले अपने विज्ञप्ति प्रपत्रों में इस स्वायत्तशासी संस्थान ने 'भारत से अमेरिका को पूंजी प्रवाह' विषय पर आयोजित शोध के नतीजों को प्रकाशित किया है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ फाइनेंस के लिए यह शोधकार्य मियामी स्थित फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के तीन प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने किया है।

प्रोफेसर जॉन ज्डैनोविक्ज़, विलियम वेल्च और सैइमन पैक ने विश्व व्यापार में सामान्य तौर पर शामिल उत्पादों के लिए एक 'ग्लोबल प्राइज़ मैट्रिक्स' की खोज की। इसके बाद भारतीय निर्यातकों तथा आयातकों द्वारा लिखी गई कीमतों को इस कसौटी पर कसा गया। इसके परिणाम चौंकाने वाले साबित हुए और इससे एक बहुत बड़े घोटाले के सूत्र हाथ लगे, जो कि इन विशेषज्ञों के अनुसार हवाला व्यवस्था का पोषण कर रहे हैं।

इस अध्ययन के अनुसार, १९९४ के दौरान अस्वाभाविक कारोबारी लागतों के द्वारा भारत से अमेरिका को पूंजी पलायन ५.८ अरब डालर के स्तर तक पहुंच गया था। इसके बाद के वर्ष में पूंजी पलायन कर दर ५.५ अरब डालर रही थी। वर्ष १९९४ के